Toppersnotes®
Unleash the topper in you

झारखण्ड

JILCCE

झारखण्ड इन्टरमीडिएट स्तरीय संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा

भाग - 2

झारखण्ड का सामान्य अध्ययन, कंप्यूटर एवं विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	झारखंड बुनियादी जानकारी	1
2	भौगोलिक विशेषताएँ	6
3	अपवाह तंत्र	13
4	जलवायु	21
5	मृदा	25
6	प्राकृतिक वनस्पति	29
7	राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य और अन्य	36
8	कृषि और संबद्ध क्षेत्र	42
9	खनिज संसाधन	55
10	ऊर्जा संसाधन	63
11	उद्योग	68
12	झारखंड की जनजातियां	82
13	प्राचीन इतिहास	98
14	मध्यकालीन इतिहास	106
15	आधुनिक इतिहास	111
16	विद्रोह और बगावत	120
17	स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन (1900–1947)	128
18	एक पृथक राज्य का गठन	137
19	झारखंड विधानमंडल	142
20	राज्यपाल	148
21	मुख्यमंत्री	151
22	मंत्रिपरिषद	153
23	न्यायपालिका	155

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	स्थानीय स्वशासन	160
25	संवैधानिक और गैर–संवैधानिक निकाय	167
26	जनसांख्यिकीय रुपरेखा	175
27	कला और वास्तुकला	181
28	मेले और त्योहार	186
29	संगीत, नृत्य और नाटक	194
30	भाषा और साहित्य	203
31	झारखंड बजट 2026–27	211
32	कंप्यूटर	219
33	जीव विज्ञान	246
34	भौतिक शास्त्र	281
35	रसायन शास्त्र	295

1

CHAPTER

झारखंड: बुनियादी जानकारी

मूलभूत जानकारी

विवरण	जानकारी
स्थापना	15 नवंबर, 2000
स्थापना दिवस	15 नवंबर
राजधानी	रांची
उप-राजधानी	दुमका
कुल जिले	24
सबसे बड़ा शहर	जमशेदपुर
जनसंख्या	3,29,88,134
भारत में जनसंख्या की दृष्टि से राज्य का स्थान	15वाँ
उच्च न्यायालय	रांची
राजकीय भाषा	हिंदी
द्वितीय राजकीय भाषा	उर्दू
अन्य भाषाएँ	संथाली, बांग्ला, मुंडारी, कुड़ुख, हो, नागपुरीया, खोरठा, पंचपरगनिया

राज्य की सीमाएँ

एक भू-आबद्ध राज्य होने के कारण, झारखंड पाँच राज्यों से घिरा हुआ है:

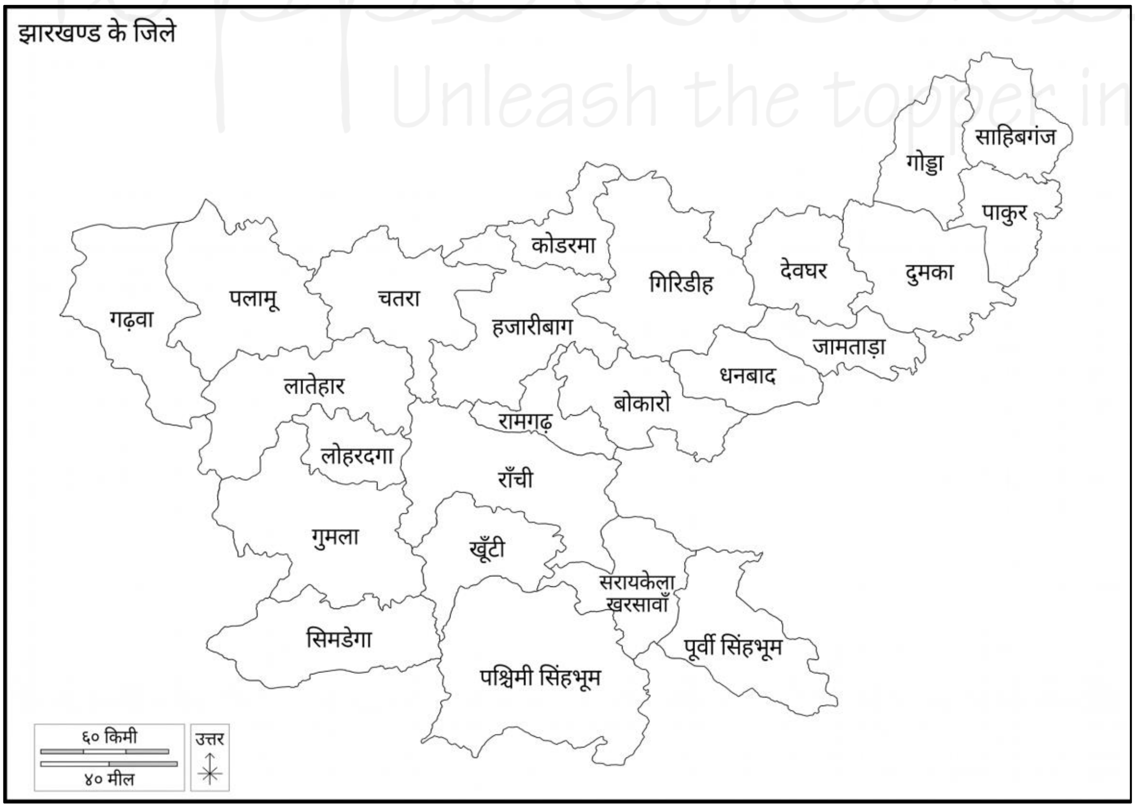

राज्य	झारखंड की सीमा से सटे जिले
उत्तर प्रदेश	1 जिला: गढ़वा
छत्तीसगढ़	4 जिले: गढ़वा, लातेहार, गुमला, और सिमडेगा
ओडिशा	4 जिले: सिमडेगा, पश्चिम सिंहभूम, सारायकेला-खरसावाँ, पूर्व सिंहभूम
बिहार	10 जिले: गढ़वा, पलामू, छत्रा, हज़ारीबाग, कोड़रमा, गिरिडीह, देवघर, डुम्का, गोड्डा, साहिबगंज
पश्चिम बंगाल	10 जिले: साहिबगंज, पाकुर, डुम्का, जमताड़ा, धनबाद, बोकारो, रामगढ़, रांची, सारायकेला-खरसावाँ, पूर्व सिंहभूम

भौगोलिक परिचय	
भौगोलिक स्थिति	भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित
अक्षांशीय विस्तार	$21^0$58' उत्तरी अक्षांश से 25^0 18' उत्तरी अक्षांश तक
देशांतर विस्तार	83^0 22' पूर्वी देशांतर से 87^0 57' पूर्वी देशांतर तक
राज्य की ज्यामितीय आकृति	चतुर्भुजाकार
क्षेत्रफल	79,710 वर्ग किमी
भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में राज्य का हिस्सा	2.42%
राज्य की लंबाई	463 किमी (पूर्व से पश्चिम)
राज्य की चौड़ाई	380 किमी (उत्तर से दक्षिण)
राज्य से गुजरने वाली अक्षांशीय रेखा	कर्क रेखा (रांची एवं गुमला से होकर गुजरती है)

कर्क रेखा का विस्तार

कर्क रेखा झारखंड के मध्य क्षेत्र से होकर गुजरती है, और इसके मार्ग में किस्को, ओरमांझी, गोला, गोपालपुर, मुर्हू, सुदी, पोखन्ना, झलहरड़ा, गोसाईदिह, और पलकुड़ी जैसे स्थान आते हैं।

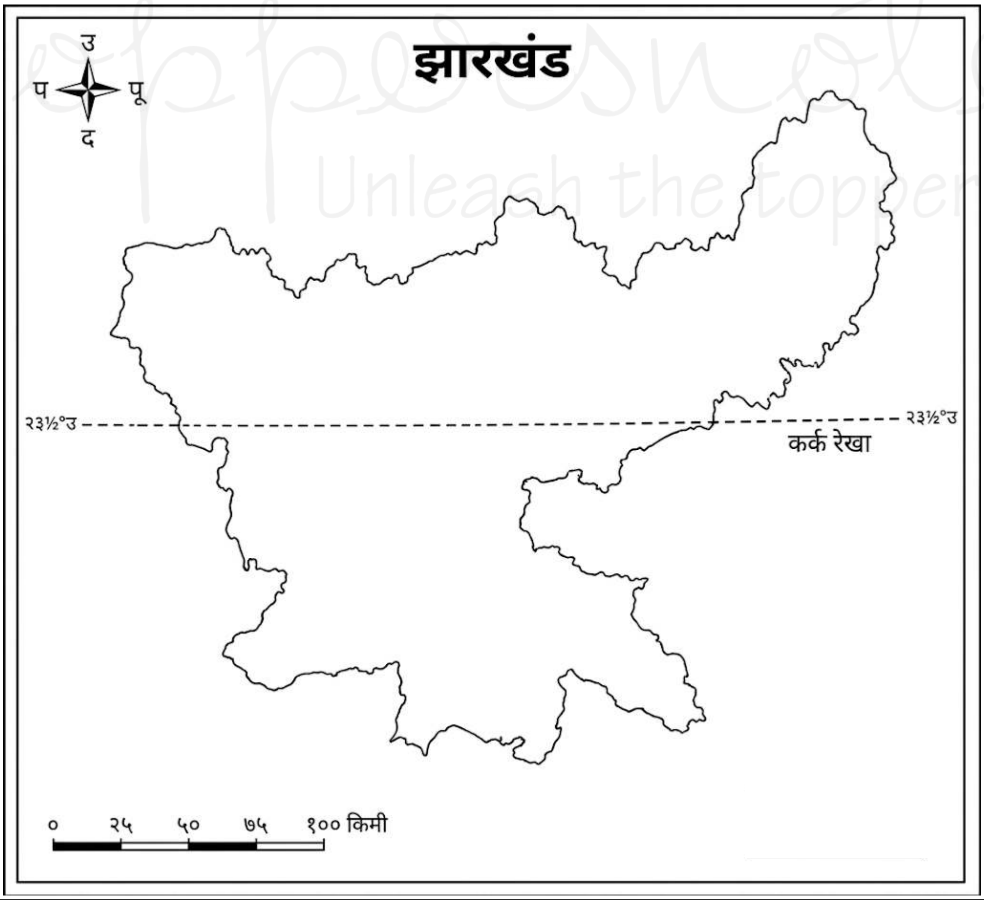

राज्य प्रतीक		
प्रतीक	**नाम**	
राज्य पशु	➢ **एशियाई हाथी (एलिफस मैक्सिमस)** - एलिफस वंश की एकमात्र जीवित प्रजाति है, जो भारत से लेकर बोर्नियो तक दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाती है। ➢ एशियाई हाथी एशिया के सबसे बड़े जीवित स्थलीय प्राणी हैं।	
राज्य पक्षी	➢ **एशियाई कोयल (यूडाइनामिस स्कोलोपेसस)** - कुक्कू कुल (कुकुलिडे) की सदस्य है, जो भारतीय उपमहाद्वीप, चीन एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाती है। ➢ एशियाई कोयल अपने अंडे कौओं एवं अन्य पक्षियों के घोंसलों में देती है, जो उसके बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। अन्य कोयलों के विपरीत, यह वयस्क अवस्था में मुख्यतः फलाहारी होती है।	
राज्य पुष्प	➢ **पलाश (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा)** जिसे सामान्यतः **'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट'** अथवा **'बास्टर्ड टीक'** कहा जाता है। ➢ यह भारतीय उपमहाद्वीप एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल पौधा होता है।	
राज्य वृक्ष	➢ **साल (शोरिया रोबस्टा),** जिसे सखुआ अथवा शाला भी कहा जाता है, यह डिप्टेरोकार्पेसी कुल का एक वृक्ष है। ➢ यह भारतीय उपमहाद्वीप का मूल वृक्ष है, जो हिमालय के दक्षिण में म्यांमार, नेपाल, भारत एवं बांग्लादेश तक पाए जाते है।	
राज्य प्रतीक चिह्न	➢ झारखंड की राज्य मुहर में **चार 'J' अक्षर** होते हैं जो एक वर्ग बनाते हैं, और इसके अंदर **अशोक चक्र रखा होता** है। **'J' अक्षर हरे रंग के** हैं, और अशोक चक्र की रूपरेखा नीली है।	झारखण्ड सरकार

जनसांख्यिकी	
विवरण	**जानकारी**
जनसंख्या	3,29,88,134 (देश में 14वाँ स्थान)
पुरुष जनसंख्या	1,69,30,315
महिला जनसंख्या	1,60,57,819
शहरी जनसंख्या	79,33,061
शहरी पुरुष जनसंख्या	41,53,829

शहरी महिला जनसंख्या	37,79,232
ग्रामीण जनसंख्या	2,50,55,073
ग्रामीण पुरुष जनसंख्या	1,27,76,486
ग्रामीण महिला जनसंख्या	1,22,78,587
जनसंख्या घनत्व	414 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
दशकवार जनसंख्या वृद्धि दर	22.42% (2001–2011)
भारत की कुल जनसंख्या में प्रतिशत भाग	2.72% (2011)
लिंगानुपात	949 (देश में 18वाँ स्थान)
साक्षरता दर	66.4% (देश में 31वाँ स्थान)
पुरुष साक्षरता दर	76.8%
महिला साक्षरता दर	55.4%
अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या	86,45,042
अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या	39,85,644

प्रशासनिक संरचना	
विधानमंडल	एकसदनीय
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र	82 (81 निर्वाचित, 1 नामांकित)
अनुसूचित जनजाति हेतु आरक्षित सीटें	28
अनुसूचित जाति हेतु आरक्षित सीटें	09
लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	14 (ST-05, SC-01)
राज्यसभा सीटें	6
सबसे बड़ा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	सिंहभूम
सबसे छोटा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र	चतरा
कुल जिले	24
कुल प्रमंडल	5
राज्य गठन के समय जिले	18
राज्य गठन के बाद नवगठित जिले	6 (लातेहार, जामताड़ा, सिमडेगा, खूंटी, सरायकेला-खरसावां, रामगढ़)
उप-प्रभाग	45
प्रखंड	264
उच्च न्यायालय	रांची (भारत का 21वाँ उच्च न्यायालय)

झारखंड में प्रथम	
प्रथम राज्यपाल	प्रभात कुमार
प्रथम मुख्यमंत्री	बाबूलाल मरांडी
प्रथम नेता प्रतिपक्ष	इंदर सिंह नामधारी
प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	स्टीफन मरांडी
प्रथम महिला कैबिनेट मंत्री	जोबा माझी
प्रथम उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	विनोद कुमार गुप्ता
प्रथम मुख्य सचिव	विजय शंकर दुबे

प्रथम पुलिस महानिरीक्षक	शिवाजी मोहन कैरे
प्रथम महाधिवक्ता	एम. एम. बनर्जी
प्रथम परमवीर चक्र पुरस्कार प्राप्तकर्ता	अल्बर्ट एक्का
प्रथम अशोक चक्र पुरस्कार प्राप्तकर्ता	रणधीर प्रसाद वर्मा
प्रथम अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी	सावित्री पूर्ति
प्रथम झारखंड लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष	फटिकचंद्र हेंब्रम
प्रथम विधानसभा के नामांकित सदस्य	जोसेफ पाचेली गाल्स्टाउन
प्रथम तांबा संयंत्र	घाटशिला
प्रथम सीमेंट कारखाना	जपला
प्रथम विश्वविद्यालय	रांची विश्वविद्यालय
प्रथम कृषि विश्वविद्यालय	बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
प्रथम मेडिकल कॉलेज	राजेंद्र मेडिकल कॉलेज (वर्तमान में राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान)
प्रथम डिग्री कॉलेज	सेंट कोलंबा कॉलेज
प्रथम दैनिक हिंदी समाचार पत्र	राष्ट्रीय भाषा
प्रथम अंग्रेजी समाचार पत्र	डेली प्रेस
प्रथम फिल्म	आक्रांत
प्रथम संथाली फिल्म	मुख्य ब्राहा
प्रथम विद्युत गृह	तिलैया
झारखंड आंदोलन के अग्रदूत	जे. बर्थोमन

भारत एवं विश्व में झारखंड का प्रथम स्थान	
भारत का प्रथम इस्पात कारखाना	जमशेदपुर (1907)
भारत का प्रथम सबसे बड़ा उर्वरक संयंत्र	सिंदरी (1951)
भारत का प्रथम बड़ा विस्फोटक उत्पादन कारखाना	गोमिया
एशिया का प्रथम मीथेन गैस कुआँ	परबतपुर (बोकारो)
भारत का सबसे बड़ा लौह एवं इस्पात कारखाना	बोकारो
विश्व का सबसे बड़ा लाख निर्यात केंद्र	तोरी (लातेहार)

विविध	
राज्य का प्रथम तांबा संयंत्र	घाटशिला
राज्य का सबसे ऊँचा जलप्रपात	बूढ़ाघाघ या लोध जलप्रपात
राज्य की सबसे ऊँची चोटी	पारसनाथ
राज्य की सबसे ठंडी चोटी	नेतरहाट
काला हीरा का नगर	धनबाद
खनिजों का भंडार गृह	छोटानागपुर
राज्य में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान	नेतरहाट
राज्य का शिमला	रांची
राज्य का स्टील सिटी	जमशेदपुर (टाटानगर)
राज्य की सबसे बड़ी नदी घाटी परियोजना	दामोदर घाटी परियोजना

2

CHAPTER

भौगोलिक विशेषताएँ

झारखंड की भूवैज्ञानिक संरचना

- झारखंड एक विविध भौगोलिक परिदृश्य, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन और समृद्ध आदिवासी संस्कृति से समृद्ध है। इसे "वनों की भूमि" के रूप में जाना जाता है।
- **यह प्रायद्वीपीय पठार (छोटा नागपुर पठार) के उत्तर-पूर्वी भाग का हिस्सा है और प्राचीन गोंडवाना भूमि से संबंधित है।** इस क्षेत्र में आर्कियन काल से लेकर उत्तर-तृतीयक काल तक की चट्टानें पाई जाती हैं।

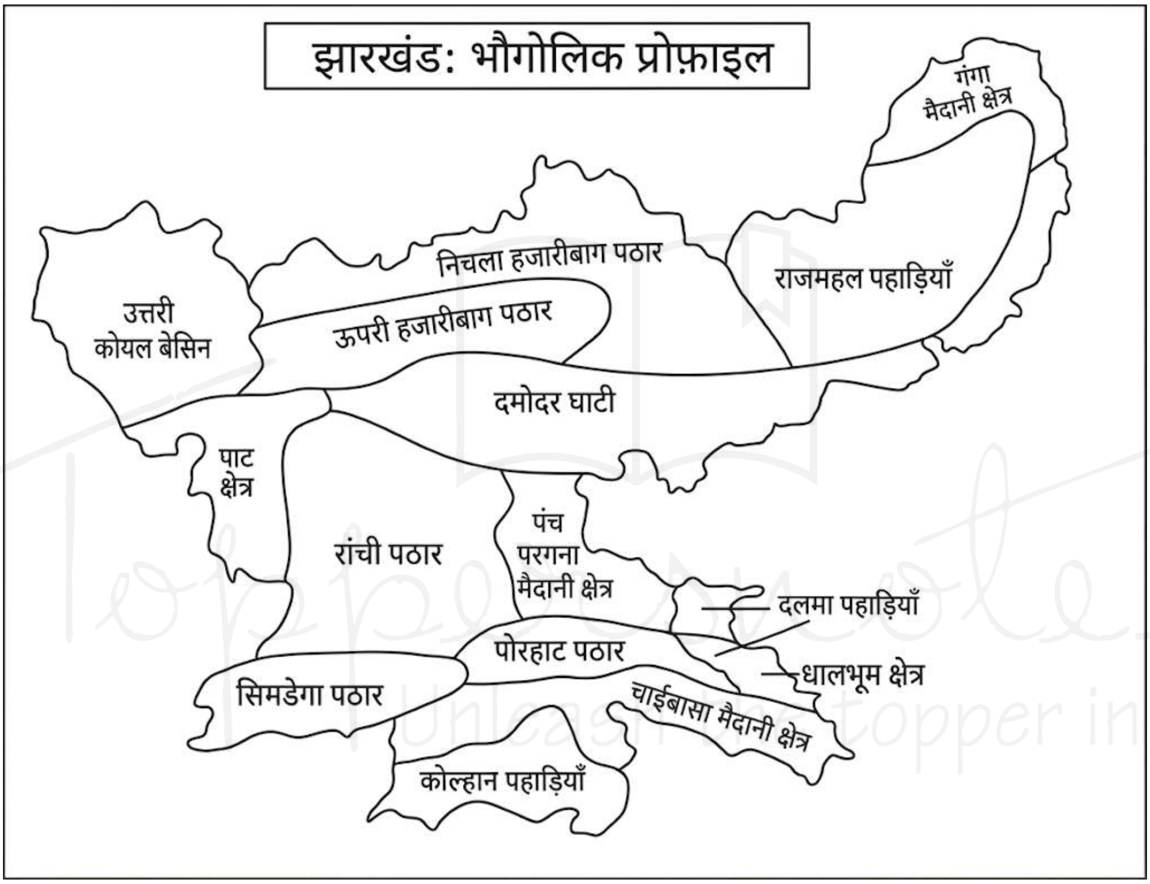

झारखंड की प्रमुख भूवैज्ञानिक संरचनाएँ निम्नलिखित हैं:

आर्कियन शैल तंत्र

- **छोटा नागपुर पठार का लगभग दो-तिहाई हिस्सा आर्कियन संरचनाओं से बना है,** जो खनिज संपदा के समृद्ध भंडार हैं।
- **"आर्कियन" शब्द, जिसे जे.डी. डाना ने प्रस्तुत किया था,** पृथ्वी की पपड़ी की सबसे पुरानी चट्टानों को संदर्भित करता है।
- **इन चट्टानों में मुख्य रूप से ग्रेनाइट और नाइस शामिल हैं,** जो प्रारंभिक पिघली हुई पृथ्वी के ठंडा होने से बनी थीं, और इनमें जीवाश्मों का अभाव होता है।
- आर्कियन चट्टानें धात्विक और अधात्विक दोनों प्रकार के खनिजों से समृद्ध हैं, **जैसे कि लोहा, मैंगनीज, तांबा, बॉक्साइट, सीसा, अभ्रक, सोना और ग्रेफाइट।**
- ये **चट्टानें पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम, सिमडेगा और झारखंड के दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में** व्यापक रूप से पाई जाती हैं।

धारवाड़ शैल तंत्र

- धारवाड़ शैल **तंत्र का विकास आर्कियन चट्टानों** से अपरदित (घिसकर अलग हुए) पदार्थों के जमाव से हुआ है और यह मुख्य रूप से **झारखंड के दक्षिणी हिस्सों में पाया जाता है।**
- इसे **धात्विक खनिजों का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है।** लोहा, मैंगनीज, निकेल, बॉक्साइट और काइनाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिज बड़े पैमाने पर इसी तंत्र से प्राप्त किए जाते हैं।
- यह तंत्र कोल्हान उच्चभूमि और जमशेदपुर तथा बोकारो के आसपास के क्षेत्रों में प्रमुखता से पाया जाता है।
- **पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम** और **सरायकेला-खरसावां** में, इस संरचना को **'कोल्हान श्रेणी'** के नाम से जाना जाता है।
- यह सबसे **पुराना अवसादी शैल तंत्र है,** और इस तंत्र में जीवाश्म अनुपस्थित होते हैं।
- **अरावली पर्वतमाला**, जो विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वतमाला है, **धारवाड़ चट्टानों से ही बनी है।**

विंध्यन शैल तंत्र

- विंध्यन तंत्र **लाल बलुआ पत्थर और अन्य अवसादी चट्टानों** के लिए सुप्रसिद्ध है और इनका उपयोग भवन निर्माण सामग्री और सजावटी पत्थरों के रूप में किया जाता है। साथ ही यह सीमेंट, चूना, कांच और रासायनिक उद्योगों के कच्चे माल के लिए भी उपयुक्त है।
- इस **शैल तंत्र का निर्माण कुडप्पा चट्टानों के बाद,** नदी घाटियों और उथले समुद्रों में अवसादों के जमाव के माध्यम से हुआ था, अत: इसकी उत्पत्ति अवसादी प्रकृति की है।
- झारखंड में, **यह सोन नदी क्षेत्र में**, विशेष रूप से रोहतास पठार के दक्षिणी भाग में पाया जाता है।
- गढ़वा और पलामू जिले इसी शैल तंत्र के अंतर्गत आते हैं, और **इसके अग्रवर्ती विस्तार को 'पारसनाथ' के नाम से जाना जाता है।**
- इस भूवैज्ञानिक संरचना में सूक्ष्मजीवों के जीवाश्मों के प्रमाण मिले हैं, जो भवन निर्माण के पत्थर के रूप में अपनी उपयुक्तता के लिए भी जानी जाती है।
- महत्वपूर्ण संरचनाएँ जैसे सांची स्तूप, लाल किला और जामा मस्जिद इस प्रणाली के लाल बलुआ पत्थर से बने हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ चूना पत्थर, चाइना क्ले और डोलोमाइट भी पाए जाते हैं।

कार्बोनिफेरस शैल तंत्र

- **यह काल व्यापक हिमनदी के लिए जाना जाता है,** और झारखंड भी हिमनदों से ढका हुआ था। **हिमनदी के प्रमाण तालचेर श्रेणी में मिलते हैं।** जैसे-जैसे हिमनद पिघले, दामोदर और सोन जैसी नदियों का निर्माण हुआ। ये चट्टानें मुख्य रूप से चूना पत्थर, क्वार्ट्जाइट और शेल्स से बनी हैं।
- **कार्बोनिफेरस शैल तंत्र का निर्माण पैलियोजोइक युग के दौरान हुआ था।** यह प्रायद्वीपीय भारत के कुछ हिस्सों में, साथ ही हिमालय और गंगा के मैदान से जुड़े क्षेत्रों में पाया जाता है।
- यह शैल तंत्र भारत में बहुत व्यापक रूप से वितरित नहीं है, लेकिन झारखंड के दक्षिण-पूर्वी भाग में इसके कुछ उदाहरण मिलते हैं।

गोंडवाना शैल तंत्र

- **पर्मियन और जुरासिक कालों को मिलाकर गोंडवाना काल कहा जाता है।** भारत के लगभग 90% कोयला भंडार इसी तंत्र में पाए जाते हैं, इसलिए, **इसे "कोयला युग" भी कहा जाता है।**
- **इस शैल तंत्र का निर्माण कार्बोनिफेरस और जुरासिक कालों के बीच हुआ था,** जिस दौरान प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख कोयला पेटियों का विकास हुआ।

- **यह तीन मुख्य भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है: भ्रंशन, अंतर्भेदन, और अवसादन।**
- **दामोदर और सोन नदी घाटियाँ, राजमहल पहाड़ियाँ, तालचेर श्रेणी, दामुदा श्रेणी और पानचेत श्रेणी का उद्भव** इसी काल के दौरान हुआ था।
- यह शैल तंत्र **पश्चिम में लातेहार से लेकर पूर्व में झरिया और रानीगंज कोयला क्षेत्रों तक फैला हुआ है।**
- **यहाँ कोयले** की परतें भी पाई जाती हैं। इन कोयला परतों के नीचे पाई जाने वाली **फायरक्ले (अग्निसह मिट्टी)** का उपयोग अग्निसह कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
- यह शैल तंत्र **लातेहार, बोकारो, पलामू, राँची, रामगढ़, हजारीबाग, चतरा, दुमका, गिरिडीह, धनबाद, पाकुड़ और गोड्डा** में पाया जाता है।

क्रीटेशस शैल तंत्र

- **राजमहल ट्रैप और दक्कन ट्रैप इस शैल तंत्र के उदाहरण हैं।**
- **राजमहल ट्रैप का निर्माण क्रीटेशस काल के दौरान ज्वालामुखी गतिविधियों** के कारण हुआ था।
- **यह शैल तंत्र पलामू, लातेहार और लोहरदगा में पाया जाता** है। इन चट्टानों के अपक्षय और अपरदन के कारण इस तंत्र में बॉक्साइट पाया जाता है।

टर्शियरी शैल तंत्र

- **टर्शियरी काल की शुरुआत लगभग 65 मिलियन वर्ष पहले हुई थी।**
- शुरुआती टर्शियरी काल के दौरान, जब भारत तिब्बत से टकराया, तो टेथिस बेसिन में जमा हो रहे तलछट, समुद्र तल के धीरे-धीरे ऊपर उठने के कारण ऊपर उठने लगे।
- हिमालय के ऊपर उठने से भारतीय उपमहाद्वीप की पुरानी स्थलाकृति बदल गई, जिसमें झारखंड की स्थलाकृति भी शामिल है।
- **'पट' क्षेत्र का निर्माण, नदी घाटियों और अन्य गर्तों का पुनर्जीवन, राजमहल का पूर्वी भाग, सोन घाटी और सुवर्णरेखा की निचली घाटी,** ये सभी इसी विवर्तनिक गतिविधि के परिणाम हैं।

सिनोज़ोइक चट्टान प्रणाली

- स प्रणाली की चट्टानें नदियों के पुनर्जीवन और अपरदन चक्रों की तीव्रता के कारण बनीं। इसके परिणामस्वरूप, कांची, सुवर्णरेखा, उत्तरी कोयल, रारू और शंख जैसी नदियों पर झरने बने।
- हिमालय के निर्माण के कारण, छोटा नागपुर पठार तीन चरणों में विकसित हुआ:
  - ✓ **पहला चरण:** 'पाट' क्षेत्र रांची और हज़ारीबाग पठारों से लगभग 1,000 फीट ऊपर उठ गया। रांची और हज़ारीबाग पठार भी इसी ऊँचाई तक बने। दामोदर नदी इन्हें दो भागों में बाँटती है।
  - ✓ **दूसरा चरण:** 'पाट' क्षेत्र, रांची और हज़ारीबाग पठारों के साथ मिलकर, लगभग 2,000 फीट तक ऊपर उठ गया।
  - ✓ **तीसरा चरण:** रांची और हज़ारीबाग पठारों के निचले हिस्से भी ऊपर उठ गए। 'पाट' क्षेत्र लगभग 3,000–3,600 फीट की ऊँचाई तक पहुँच गया, जबकि रांची और हज़ारीबाग पठार लगभग 1,000–2,000 फीट तक ऊपर उठ गये।

नए जलोढ़ निक्षेप

- नदी घाटियों में**, जलोढ़ निक्षेपों से बनी भू-आकृतियाँ पाई जाती हैं।** झारखंड में, ये राजमहल के पश्चिमी भाग, सोन घाटी और सुवर्णरेखा घाटी के निचले भाग में स्थित हैं।
- झारखंड की अधिकांश नदियाँ इन्हीं मैदानों से होकर बहती हैं। यह क्षेत्र मुख्य रूप से **देवघर, दुमका, गोड्डा, पश्चिमी पाकुड़ और साहिबगंज ज़िले के मध्य भाग तक फैला हुआ है।**

Toppersnotes Unleash the topper in you

झारखंड का भू-आकृतिक विभाजन

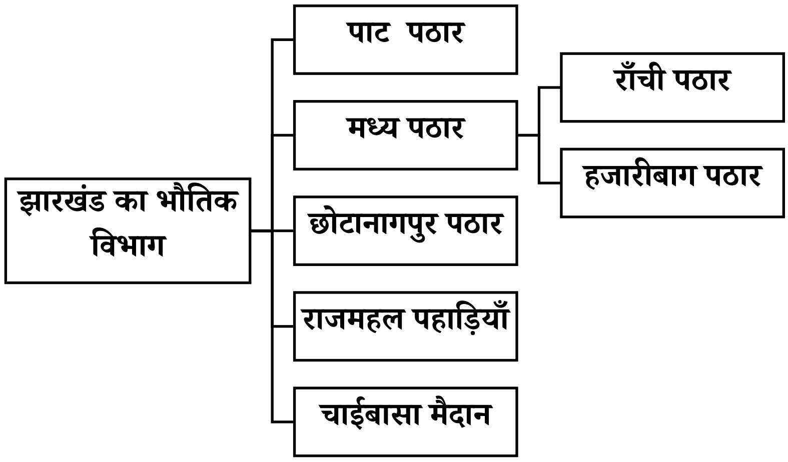

ऊँचाई के आधार पर, झारखंड को पाँच भू-आकृतिक विभाजनों में बाँटा गया है, जो इस प्रकार हैं:

पाट पठार क्षेत्र

- यह पठार **राँची पठार के पश्चिम में स्थित है और इसे पश्चिमी या उच्च राँची पठार के नाम से भी जाना जाता है।**
- यह **उत्तर-पश्चिमी गुमला से लेकर लोहरदगा और पलामू तक फैला हुआ है।**
- **समुद्र तल से लगभग 900-1,100 मीटर की ऊँचाई के साथ,** यह राज्य की सबसे ऊँची सतह है (पारसनाथ पहाड़ी को छोड़कर)।
- इस पठार में राँची का उत्तर-पश्चिमी भाग और पलामू का दक्षिणी भाग शामिल है। इसमें **सपाट चोटी वाली, कटी-फटी** पहाड़ियाँ शामिल हैं **जिन्हें स्थानीय रूप से पाट कहा जाता है।**
- पाट क्षेत्र का ढलान उत्तर में छोटा नागपुर पठार की बाहरी भाग की ओर तथा पूर्व और दक्षिण में रांची के पठार की ओर है।
- **इस क्षेत्र के सबसे ऊँचे पाट में नेतरहाट पाट, गणेशपुर पाट और जमिरा पाट शामिल हैं। नेतरहाट पाट (1,070 मीटर) इस क्षेत्र का सबसे ऊँचा बिंदु है। इस क्षेत्र के सपाट मैदानों को 'चौबीस मैदान' के नाम से जाने जाते है।**
- इस क्षेत्र की पहाड़ियाँ **नीस और ग्रेनाइट से बनी हैं,** जो दक्कन लावा से ढकी हुई हैं; यह लावा लंबे समय तक अपक्षय के कारण लेटेराइट में बदल गया है।
- इस क्षेत्र की मिट्टी में चूना, मैग्नीशियम, नाइट्रोजन और पोटाश की कमी होती है, जिसके परिणामस्वरूप 'लीचिंग' (पोषक तत्वों के बह जाने) के कारण कृषि उत्पादकता कम होती है।
- उत्तर में, **इस क्षेत्र की जल निकासी उत्तर की ओर बहने वाली उत्तरी कोयल नदी** और उसकी सहायक नदियों द्वारा होती है।
- नदी घाटियाँ आमतौर पर संकरी होती हैं क्योंकि वे पहाड़ी इलाकों से होकर गुजरती हैं, इसका एक अपवाद तश्तरी के आकार का 'चेचारी बेसिन' है, जिसकी जल निकासी बूढ़ा नदी द्वारा होती है।
- ऊबड़-खाबड़ भूभाग और मिट्टी की खराब गुणवत्ता के कारण, इस क्षेत्र का अधिकांश भाग कृषि के लिए अनुपयुक्त है और जंगलों से ढका हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ जनसंख्या विरल है।
- कुछ पाट ऐसे हैं जहाँ परिस्थितियाँ अपेक्षाकृत अनुकूल हैं या जहाँ बॉक्साइट का खनन किया जाता है, ऐसे स्थानों पर जनसंख्या का जमावड़ा थोड़ा अधिक है। वास्तव में, इस क्षेत्र में राज्य के सबसे छोटे कस्बे स्थित हैं। ग्रामीण बस्तियाँ आमतौर पर आकार में छोटी और दूर-दूर तक फैली हुई होती हैं।

मध्य पठार

रांची और हज़ारीबाग़ के पठार मध्य क्षेत्र के मुख्य पठार हैं।

रांची का पठार

- **यह झारखंड का सबसे बड़ा पठार है,** जिसकी **औसत ऊँचाई लगभग 700 मीटर है।** यह धीरे-धीरे दक्षिण-पूर्व की ओर ढलान बनाते हुए सिंहभूम के पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र में मिल जाता है।

- **दामोदर नदी यहीं से निकलती है** और एक भ्रंश घाटी से होकर बहती है। उत्तर की ओर, रांची का पठार दामोदर द्रोणी द्वारा हज़ारीबाग़ के पठार से अलग होता है, जबकि पश्चिम की ओर 'पाट' के नाम से जाने जाने वाले पठारों का एक समूह स्थित है।
- **यह पठार आकार में लगभग चौकोर है।** इसकी सतह ऊबड़-खाबड़ है, और कुछ जगहों पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी दिखाई देती हैं। **इस क्षेत्र के ऊँचे हिस्सों को 'टाँड़' कहा जाता है, जबकि निचले हिस्सों को 'दोन' कहते हैं।**
- पठार के दक्षिणी हिस्से का ढलान **सिमडेगा के मैदानों की ओर अपेक्षाकृत कम तीव्र है।**
- **वनावरण मुख्य रूप से पठार के किनारों वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।**
- रांची के पठार के किनारों पर अनेक जलप्रपात देखने को मिलते हैं। जब पठार पर बहने वाली नदियाँ ऊँची और खड़ी ढलानों से नीचे के क्षेत्रों में उतरती हैं, तो वे जलप्रपात बनाती हैं।
- **उत्तरी कारो नदी रांची के पठार के दक्षिणी किनारे पर 17 मीटर ऊँचा 'पेरवाघाघ जलप्रपात' बनाती है।** इस प्रकार के जलप्रपातों को **'स्कार्प फॉल्स' कहा जाता है।**
- इसके अन्य उदाहरणों में सुवर्णरेखा नदी पर स्थित **'हुंडरू जलप्रपात' (73 मीटर), कांची नदी पर स्थित 'दसम जलप्रपात' (44 मीटर), और शंख नदी पर स्थित 'सदनी जलप्रपात' (60 मीटर) शामिल हैं।**

हज़ारीबाग़ का पठार

- यह **रांची के पठार का ही विस्तार है** और इसकी ऊँचाई भी लगभग उतनी ही है, हालाँकि इसका क्षेत्रफल रांची के पठार से कम है। इसके **उत्तर में 'बाहरी छोटानागपुर पठार', पूर्व में 'धनबाद पेनिप्लेन' (मैदानी क्षेत्र), और दक्षिण में 'दामोदर द्रोणी' स्थित है।** इस पठार का एक बड़ा हिस्सा वनों से आच्छादित है।
- हज़ारीबाग़ पठार को प्राय: दो भागों में विभाजित किया जाता है:

1. **ऊँचा पठार**
   - ✓ इस हिस्से को **हज़ारीबाग पठार के नाम से जाना जाता है,** जिस पर हज़ारीबाग शहर बसा हुआ है।
   - ✓ इसके उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी हिस्से ज़्यादातर खड़ी ढलान वाले हैं, जबकि पश्चिम की ओर यह संकरा होता जाता है और सिमरिया तथा जबरा के पास धीरे-धीरे नीचे उतरता है। फिर यह दक्षिण की ओर मुड़ता है और टोरी परगना के रास्ते राँची पठार से जुड़ जाता है।
   - ✓ यह **आम तौर पर दामोदर घाटी द्वारा राँची पठार से अलग होता है** और इसके चारों ओर खड़ी चट्टानें हैं।
   - ✓ **इसका पश्चिमी हिस्सा दक्षिण में दामोदर नदी के जल-निकास क्षेत्र और उत्तर में लिलाजन तथा मोहना नदियों के बीच एक बड़ा जल-विभाजक बनाता है।**
   - ✓ **इस पठार की औसत ऊँचाई लगभग 600 मीटर है।** यहाँ की कुछ महत्वपूर्ण पहाड़ियों में **असवा पहाड़ (751 मीटर), जरीमो (666 मीटर), बरसोत (660 मीटर), सेंद्राईली (670 मीटर), महुदा (734 मीटर) और चाँदवार (860 मीटर) शामिल हैं।**
   - ✓ **झारखंड की सबसे ऊँची चोटी, पारसनाथ (1365 मीटर), इसी क्षेत्र में गिरिडीह ज़िले में स्थित है।** इसका **सबसे ऊँचा बिंदु, जिसे सम्मेद शिखर के नाम से जाना जाता है,** जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

2. **निचला पठार**
   - ✓ **इसे कोडरमा पठार** या निचला हज़ारीबाग़ पठार **भी कहा जाता है।**
   - ✓ इसका उत्तरी किनारा बिहार के मैदानी इलाकों से ऊपर उठा हुआ है और पहाड़ियों की एक श्रृंखला जैसा दिखाई देता है, हालाँकि यह वास्तव में पठार का किनारा है, **जो गया के मैदान से लगभग 240 मीटर ऊँचा है।**
   - ✓ पूर्व की ओर, यह उत्तरी किनारा गया क्षेत्र की सहायक नदियों और बराकर नदी की सहायक नदियों के बीच एक स्पष्ट जल-विभाजक बनाता है और यह **बराकर नदी कोडरमा और गिरिडीह ज़िलों से होते हुए पूर्व की ओर बहती है।**

- ✓ इसकी पूर्वी ढलान हल्की और एक समान है; यह नदी के पार दक्षिण-पूर्व की ओर संथाल परगना तक फैली हुई है और धीरे-धीरे बंगाल के निचले मैदानी इलाकों में मिल जाती है।
- ✓ इसकी दक्षिणी सीमा ऊँचे पठार के किनारे द्वारा बनाई जाती है, जो इसके पूर्वी छोर तक फैली हुई है। यहाँ से, एक नीचा और अस्पष्ट जल-विभाजक पूर्व की ओर पारसनाथ पहाड़ियों के पश्चिमी ढलानों तक जाता है।
- ✓ इस रेखा के दक्षिण का जल-निकास **जमुनिया नदी के रास्ते दामोदर नदी में जाकर मिलता है।**

छोटा नागपुर का पठार

- ➢ छोटा नागपुर के पठार की **औसत ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 300-450 मीटर है और यह प्रीकैम्ब्रियन काल की चट्टानों से बना है।**
- ➢ **इसमें राँची, धनबाद, गोड्डा, दुमका, देवघर, साहिबगंज, पलामू, हज़ारीबाग, गिरिडीह, और पूर्वी तथा पश्चिमी सिंहभूम जैसे ज़िले शामिल हैं, जो झारखंड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 47.8% हिस्सा बनाते हैं।**
- ➢ इस क्षेत्र में समतल मैदान और खेती योग्य जमीन के बड़े-बड़े विस्तार हैं, जिनके बीच-बीच में अलग-थलग पहाड़ियाँ और अनियमित चट्टानी संरचनाएँ मौजूद हैं।
- ➢ अधिकांश हिस्सों में मिट्टी **'नीस' और 'ग्रेनाइट' से बनी है,** विशेष रूप से राँची और हज़ारीबाग के पठारों में—जबकि सिंहभूम के कुछ क्षेत्रों में यह 'क्वार्टज़ाइट' और 'शिस्ट' से बनी है।
- ➢ हालाँकि, **यहाँ की मिट्टी में आमतौर पर चूना, फॉस्फोरिक एसिड और नाइट्रोजन की कमी होती है,** लेकिन उर्वरकों के उपयोग से इसकी उत्पादकता में काफ़ी वृद्धि की जा सकती है।
- ➢ **पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम ज़िले लोहा, तांबा और मैंगनीज़ जैसे खनिजों से समृद्ध हैं,** जबकि पलामू ज़िले में कोयला, चूना पत्थर, फायरक्ले, लौह अयस्क और ग्रेफाइट के भंडार मौजूद हैं। खनिज संपदा के कारण, छोटा नागपुर के पठार को अक्सर **"झारखंड का खज़ाना"** कहा जाता है।

राजमहल की पहाड़ियाँ

- ➢ राजमहल की पहाड़ियाँ **जुरासिक काल के दौरान** ज्वालामुखी लावा के बहाव के परिणामस्वरूप बनी थीं।
- ➢ इन **पहाड़ियों की औसत ऊँचाई लगभग 400 मीटर है,** जो आसपास के संथाल परगना क्षेत्र से लगभग 150–300 मीटर अधिक है। यहाँ की चट्टानें मुख्य रूप से बेसाल्ट से बनी हैं।
- ➢ ये पहाड़ियाँ झारखंड के उत्तरी भाग में, राजमहल की पहाड़ियों से लेकर कैमूर की पहाड़ियों तक फैली हुई हैं, और इनमें निचली नदी घाटियाँ तथा मैदानी क्षेत्र शामिल हैं।
- ➢ इस क्षेत्र में **देवघर, दुमका, गोड्डा, पाकुड़ का पश्चिमी भाग, तथा साहिबगंज ज़िले के मध्य और दक्षिणी भाग शामिल हैं।**
- ➢ **इस क्षेत्र की प्रमुख नदी घाटियों में सुवर्णरिखा, दामोदर, बराकर, शंख, उत्तरी कोयल, दक्षिणी कोयल, मोर, अजय और गुमानी नदियाँ शामिल हैं।**

चाइबासा का मैदान

- ➢ चाइबासा का मैदान झारखंड के प्रमुख मैदानों में से एक है, **यह राज्य के पूर्वी-मध्य भाग में स्थित पश्चिमी सिंहभूम क्षेत्र में स्थित है**, और इसकी औसत ऊँचाई लगभग 150 मीटर है।
- ➢ यह मैदान **दलमा श्रेणी, धालभूम श्रेणी, कोल्हान पहाड़ियों और पोरहाट पहाड़ियों के केंद्र में स्थित है।**
- ➢ इस क्षेत्र में, **छोटी-छोटी अलग-थलग पहाड़ियों को 'टोंगरी' के नाम से जाना जाता है, जबकि गुम्बदाकार पहाड़ियों को 'डोंगरी' कहा जाता है।**

<u>**झारखंड की पहाड़ियाँ**</u>

नाम	**स्थान**
ध्वजाधारी पहाड़	कोडरमा
नेतरहाट पहाड़ी (झारखंड में "पहाड़ियों की रानी" के रूप में जाना जाता है)	पलामू
मकामरो पहाड़ियाँ	कोडरमा
टैगोर पहाड़ी	रांची
पारसनाथ पहाड़ी	गिरिडीह
कोल्हान पहाड़ी	चाईबासा
कैनेरी पहाड़ी	हजारीबाग
त्रिकूट (तिरकुट) पर्वत	देवघर
रांची पहाड़ी	रांची
फुलडुंगरी पहाड़ी	घाटशिला

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER अपवाह तंत्र

झारखंड भारत के पूर्वी राज्यों में से एक है। झीलों, जलप्रपातों और ताजगी भरी हरियाली की प्रचुरता झारखंड को एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण स्थल बनाती है।

झारखंड की जल निकासी प्रणाली

पूर्वी भारत में स्थित झारखंड अपनी विविध भौगोलिक संरचना के लिए जाना जाता है, जो छोटा नागपुर पठार से गंगा मैदान तक फैली हुई है। इस विविध भूदृश्य के कारण यहाँ एक जटिल जल निकासी प्रणाली विकसित हुई है, जिसमें नदियाँ, सहायक नदियाँ और छोटे नाले शामिल हैं, जो राज्य की संस्कृति, अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी के लिए आवश्यक हैं। झारखंड में स्थायी और मौसमी दोनों प्रकार की नदियाँ हैं, जिसमें दामोदर नदी, जिसे ऐतिहासिक रूप से देवनाथ कहा जाता था, क्षेत्र की जल निकासी प्रणाली में प्रमुख नदी है।

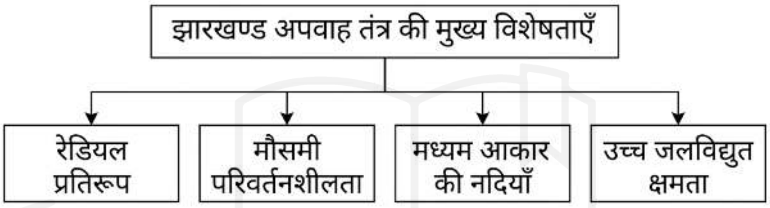

झारखंड की नदियाँ

- झारखंड की नदियाँ मुख्य रूप से **वर्षा पर निर्भर** होती हैं। झारखंड में अनुमानित जल संसाधन **28,781 मिलियन क्यूबिक मीटर** हैं, जिनमें से **82.7% भूजल** है, जबकि शेष सतही जल के रूप में उपलब्ध है। नदियाँ और जलप्रपात झारखंड की अपवाह प्रणाली के मुख्य घटक हैं।
- झारखंड की अपवाह प्रणाली विभिन्न क्षेत्रों के ढालन, जल की उपलब्धता, वनस्पति घनत्व और मिट्टी की संरचना द्वारा निर्धारित होती है। **संथाल परगना** की नदियाँ **राजमहल की पहाड़ियों** से निकलती हैं, जबकि शेष नदियाँ **नेतरहाट, रांची और हजारीबाग** के पठारों से निकलती हैं। ये नदियाँ पठार के निर्माण से भी पुरानी हैं।

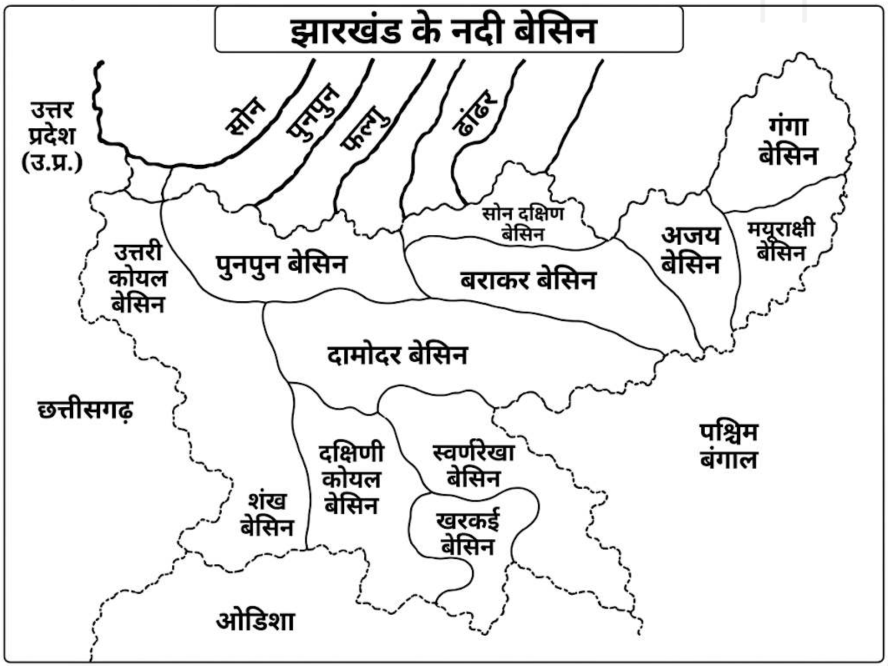

राज्य की नदियाँ मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित होती हैं:

पूर्व से दक्षिण की ओर बहने वाली नदियाँ

ये नदियाँ **छोटानागपुर पठार के दक्षिणी भाग से निकलती हैं और पूर्व तथा दक्षिण की ओर बहती हैं। इनमें दामोदर, स्वर्णरिखा, बराकर, मयूराक्षी, शंख, अजय, गुमानी और दक्षिणी कोयल नदियाँ शामिल हैं।**

दामोदर नदी

- दामोदर नदी **लोहरदगा जिले के कुरु के पास से निकलती है** और छोटानागपुर पठार से निकलते हुए पूर्व की ओर बहती है। इसे **पहले 'देव नदी'** के नाम से जाना जाता था। **नदी की कुल लंबाई लगभग 592 किमी है। यह झारखंड की सबसे बड़ी और सबसे लंबी नदियों में से एक है।**
- यह झारखंड में हजारीबाग, गिरिडीह और धनबाद से होकर गुजरती है, फिर पश्चिम बंगाल (रानीगंज, आसनसोल, दुर्गापुर, बर्धमान) में बहती है और **अंत में हावड़ा के पास हुगली नदी में मिल जाती है।**
- इसकी सहायक और उप-सहायक नदियों में **कोनार, बराकर, हहारो, बोकारो, घारी, जमुनिया, गुआया, गढ़ी और भेड़ा नदियाँ शामिल हैं।**
- **इस नदी मे** बार-बार आने वाली बाढ़ के कारण इस नदी को पहले **'बंगाल का शोक'** कहा जाता था। **दामोदर घाटी निगम (DVC)** की स्थापना के बाद, यह आसपास के क्षेत्रों के लिए फायदेमंद साबित हुई है।
- दामोदर को अब **भारत की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक माना जाता है।**
- **धनबाद और गिरिडीह इसके किनारे स्थित हैं।**
- **दामोदर घाटी की कोयला खदानें** भारत का सबसे बड़ा कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं, इसलिए दामोदर घाटी को **'भारत का रुहर'** कहा जाता है। **DVC की स्थापना 1948** में हुई थी, जिसके तहत इस नदी पर आठ बांध बनाए गए थे।

सुवर्णरिखा नदी

- सुवर्णरिखा नदी का **उद्गम रांची के पास स्थित नगरी गाँव से होता है,** जो छोटा नागपुर पठार पर स्थित है। यह दक्षिण-पूर्वी दिशा में बहती है, और **झारखंड में लगभग 269 किलोमीटर, पश्चिम बंगाल में** 64 किलोमीटर, और ओडिशा में 162 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद **बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। इस नदी की कुल लंबाई लगभग 395 किलोमीटर है।**
- इस नदी बेसिन के उत्तर-पश्चिम में छोटा नागपुर पठार, दक्षिण-पश्चिम में ब्राह्मणी बेसिन, दक्षिण में बुर्हाबलांग बेसिन, और दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी स्थित है। पठारी क्षेत्र से होकर बहने के कारण, यह नदी कई जलप्रपात बनाती है, जिनमें से हुंडरू जलप्रपात (320 फीट) बहुत प्रसिद्ध है।
- **सुवर्णरिखा नदी की एक सहायक नदी, रारू (या रारहू) नदी, गौतमधारा जलप्रपात (150 फीट) बनाती है,** जो रांची से लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
- यह नदी अंततः बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। **इसकी प्रमुख सहायक नदियों में रारू, खरकई, कांची, करकरी, गोरा नाला, जमार और शंख नदियाँ शामिल हैं।**
- **'सुवर्णरिखा' नाम इसकी रेत में सोने के कणों की उपस्थिति के कारण पड़ा है।** इसके तट पर हिंडाल्को (HINDALCO), उषा मार्टिन, टाटा स्टील, टाटा पिगमेंट्स और यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (UCIL) जैसे कई उद्योग स्थित हैं।
- जमशेदपुर और रांची (मूरी) स्थित कारखानों से निकलने वाले धात्विक और जहरीले औद्योगिक कचरे, UCIL से निकलने वाले रेडियोधर्मी कचरे, तथा आस-पास के कस्बों से आने वाले सीवेज और ठोस कचरे के बहाव के कारण यह नदी और इसकी सहायक नदियाँ अत्यधिक प्रदूषित हो गई हैं।

बरकार नदी

- **यह नदी हज़ारीबाग़ ज़िले के पद्मा से निकलती है,** जो छोटा नागपुर पठार के उत्तरी भाग में स्थित है। यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और फिर झारखंड के गिरिडीह और धनबाद ज़िलों से गुज़रने के बाद उत्तर की ओर मुड़ जाती है। **अंत में, यह पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान ज़िले में दिशेरगढ़ के पास दामोदर नदी में मिल जाती है।**
- **इस नदी की लंबाई 225 किलोमीटर है।**
- **बरकार नदी, दामोदर नदी की मुख्य सहायक नदी है।** यह एक वर्षा-पोषित नदी है और वर्षा के मौसम में इसमें पानी की भारी मात्रा होती है। दामोदर घाटी परियोजना के तहत इस नदी पर **जलाशय** बनाए गए हैं, **जिनके नाम तिलैया बांध और मैथन बांध हैं। प्रसिद्ध कल्याणेश्वरी मंदिर और बराकर स्थित एक जैन मंदिर इसके किनारों पर स्थित हैं। उसरी और बरसोती, बरकार नदी की मुख्य सहायक नदियाँ हैं।**

मयूराक्षी नदी

- इस नदी को **'मोर' और 'मोराखी' के नाम से भी जाना जाता है। 'मयूराक्षी' शब्द का अर्थ है 'मोर की आँख'।**
- **यह देवघर ज़िले की त्रिकूट पहाड़ियों से निकलती है।** वहाँ से, यह उत्तर-पश्चिम दिशा से दुमका ज़िले में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्व दिशा में बहती है। **अमजोरा में, यह पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती है। अपने ऊपरी प्रवाह में, इसे 'मोतीहारी' के नाम से भी जाना जाता है।**
- **पश्चिम बंगाल के सैंथिया में, मयूराक्षी नदी, गंगा नदी में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियों में टिपरा, पुसारो, नुनबिल, सिध, दौना और धोवाई नदियाँ शामिल हैं।**
- **इस नदी की लंबाई 250 किलोमीटर है।**
- इस नदी पर 1955 में **मसांजोर बांध** बनाया गया था, जिसे **कनाडा बांध के नाम से भी जाना जाता है।** इसे झारखंड की **एकमात्र नौगम्य नदी माना जाता है।**

संख/शंख नदी

- यह नदी **गुमला ज़िले के रायडीह से निकलती है।** यह गुमला (झारखंड) और रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के बीच सीमा बनाती है। **इसकी मुख्य सहायक नदियाँ चिरा, लावा, कोक, गिरवा, साईजोर, बांदा और पालमारा नदियाँ हैं।**
- यह छत्तीसगढ़ में प्रवेश करने से पहले **झारखंड के भीतर 67.5 किलोमीटर तक बहती है।**
- छत्तीसगढ़ से बहने के बाद, यह फिर से झारखंड में प्रवेश करती है और **अंत में कोयल नदी में मिल जाती है।**
- यह नदी सदनी घाघ (60 मी) नामक एक **सुंदर झरने के माध्यम से बरवे के मैदानों में उतरती है।**

अजय नदी

- यह **नदी मुंगेर ज़िले (बिहार) के दक्षिण-पश्चिम से निकलती** है और **झारखंड के देवघर ज़िले में प्रवेश करती है।**
- **पथरो और जयंती नदियाँ इसकी मुख्य सहायक नदियाँ** हैं। **अजय नदी की कुल लंबाई 288 km** है, जिसमें से 152 km पश्चिम बंगाल में है।
- यह जामताड़ा ज़िले में प्रवेश करती है और कुछ दूरी तक बहने के बाद **महाराजपुर के पास मोली जलप्रपात बनाती है।**

गुमानी नदी

- यह नदी **झारखंड की राजमहल पहाड़ियों से निकलती है।** यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और **साहिबगंज ज़िले की बरहेट घाटी में मुरल नदी में मिल जाती है।**

दक्षिण कोयल नदी

- यह **नदी रांची पठार पर स्थित नगरी गाँव से निकलती** है। यह शुरू में पश्चिम की ओर लोहरदगा ज़िले तक बहती है और फिर गुमला ज़िले की ओर मुड़ जाती है। **यह अंत में ओडिशा के गंगापुर में शंख नदी में मिल जाती है।**
- कारो नदी, दक्षिण कोयल नदी की मुख्य सहायक नदी है। **इनके संगम पर प्रस्तावित कोयल-कारो परियोजना की योजना बनाई गई है।**

उत्तर की ओर बहने वाली नदियाँ

ये नदियाँ झारखंड में उत्तर की ओर बहती हैं। **इनमें सोन, उत्तरी कोयल, फल्गु, पंचानन, बांसलोई और पुनपुन नदियाँ शामिल हैं।**

सोन नदी

- यह नदी मध्य प्रदेश के **अनूपपुर ज़िले में मैकाल पर्वतमाला की अमरकंटक पहाड़ियों से निकलती है।** यह शुरू में उत्तर की ओर बहती है और फिर पूर्व की ओर मुड़ जाती है। **इसे 'सोमभद्र' या 'हिरण्यवाह' के नाम से भी जाना जाता है।**
- यह **यमुना के बाद गंगा की दूसरी सबसे लंबी सहायक नदी है।**
- यह नदी **कैमूर पर्वतमाला के समानांतर बहती है** और उत्तर प्रदेश तथा बिहार से होते हुए पूर्व और उत्तर-पूर्व दिशा में आगे बढ़ती है, और **अंत में पटना के पास मनेर में गंगा में मिल जाती है। सोन नदी की कुल लंबाई 780 किमी है।**
- यह झारखंड के गढ़वा और पलामू ज़िलों तथा बिहार के रोहतास और भभुआ **ज़िलों के बीच सीमा बनाती है,** इस प्रकार **यह झारखंड और बिहार के बीच एक विभाजक रेखा का काम करती है।**
- डेहरी में नदी का मार्ग बहुत चौड़ा है (लगभग 5 किमी)। 1968 में निर्मित **इंद्रपुरी बैराज, विश्व के सबसे लंबे बैराजों में से एक है** (1407 मीटर लंबा)। **इसकी मुख्य सहायक नदियाँ रिहंद, कोयल और कोचन हैं।**

उत्तरी कोयल नदी

- **यह नदी राँची पठार के मध्य भाग से निकलती है** और **सोन नदी में मिलने से पहले पलामू प्रमंडल से होकर बहती है। इसकी कुल लंबाई 260 किमी है।**
- **अमानत, औरंगा, गोगरा और मैला नदियाँ इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।**
- यह नदी गर्मियों में सूखी रहती है, लेकिन बरसात के मौसम में जल से भर जाती है। उत्तरी कोयल नदी और इसकी सहायक नदी **'बुरहा'** अपने **बुरहाघाट जलप्रपात के लिए जानी जाती हैं, जो झारखंड का सबसे ऊँचा जलप्रपात है (142 मीटर)।**

कन्हर नदी

- **कन्हर नदी सोन नदी की एक सहायक नदी है। यह छत्तीसगढ़ के सरगुजा ज़िले से निकलती है और गढ़वा ज़िले के भंडरिया में झारखंड में प्रवेश करती है।**
- यह नदी लगभग 50 मील तक सरगुजा और पलामू के बीच **सीमा बनाती है।** यह पश्चिम की ओर बहती है और फिर उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है।

पुनपुन नदी

- **यह नदी झारखंड के पलामू ज़िले में 'चोरहा पहाड़ी' से निकलती है।** यह उत्तर-पूर्व दिशा में बहती है, झारखंड के चतरा ज़िले से गुज़रती है और फिर बिहार के औरंगाबाद, गया और पटना ज़िलों से होते हुए, **अंत में पटना ज़िले के फतुहा के पास गंगा नदी में मिल जाती है।**
- इस नदी को **' किक्कट' और 'बमागधी' नामों से भी जाना जाता है। यह गंगा नदी की एक सहायक नदी है।**
- **बटाने, मादर और मोहर नदियाँ इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं। वायु पुराण और पद्म पुराण में** 'गया महात्म्य' के संदर्भ में इसका उल्लेख "पुन: - पुन:" (जिसका अर्थ है बार-बार) के रूप में किया गया है, जिससे इसका नाम 'पुनपुन' पड़ा।

पंचानन नदी

- यह नदी **छोटा नागपुर पठार में पाँच धाराओं के संगम से निकलती है, जिनका नाम है: पेमार, तिलैया, धनारजे, महाने और पंचानन।**
- अपने उद्गम स्थल से, यह नदी गिरियक (बिहार के नवादा ज़िले में) की ओर बहती है, फिर उत्तर की ओर बिहार शरीफ़ की ओर बढ़ती है, जहाँ यह कई धाराओं में बँट जाती है। कुछ दूरी तय करने के बाद, ये धाराएँ फिर से मिल जाती हैं और सकरी नदी में समाहित हो जाती हैं।

फल्गु (या फाल्गु) नदी

- यह नदी **छोटा नागपुर पठार की छोटी-छोटी धाराओं से निकलती है। बोधगया के पास यह 'मोहना' नामक एक सहायक नदी से मिलती है और एक बड़ी नदी का रूप ले लेती है। इसे 'निरंजना', 'नीलांजन' या 'लीलाजन' नामों से भी जाना जाता है।**
- यह नदी 'पितृपक्ष' अनुष्ठानों के लिए विशेष रूप से जानी जाती है, जिसके दौरान लोग अपने पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए गया जाते हैं।

सकरी नदी

- यह नदी **छोटा नागपुर पठार से निकलती** है और झारखंड के हज़ारीबाग़ से होते हुए, फिर बिहार के गया और मुंगेर ज़िलों से गुज़रती है। **अपने प्रवाह मार्ग में, इसमें कोयल और मोरहर नदियाँ आकर मिलती हैं।**
- **अंत में, यह बिहार के मोकामा ज़िले के 'ताल' क्षेत्र में विलुप्त हो जाती है।**

कारो नदी

- यह नदी **गुमला ज़िले के बसिया प्रखंड से निकलती है** और **'फेरुघाघ' नामक जलप्रपात के माध्यम से पठार से नीचे उतरती है।** अपने प्रवाह मार्ग में, 'दक्षिण कारो' नदी इसमें आकर मिलती है, और आगे की ओर बहते हुए**, मनोहरपुर के पास इसमें 'कोयना' नदी मिल जाती है।**
- इसके बाद यह ओडिशा में बहती है, **जहाँ अंततः यह शंख नदी में मिल जाती है।** पश्चिमी सिंहभूम में लौह अयस्क के खनन से निकलने वाले रेड ऑक्साइड के कारण यह नदी प्रदूषित हो रही है।

बैतरणी (वैतरणी) नदी

- यह नदी **ओडिशा की गोनासिका पहाड़ियों से निकलती है।**
- **इसकी मुख्य सहायक नदी बूढ़ा नदी है।**
- इसका ऊपरी प्रवाह **ओडिशा और झारखंड के बीच की सीमा का एक हिस्सा बनाता है।**

बांसलोई नदी

- यह नदी **झारखंड के गोड्डा जिले के पास स्थित बांस पहाड़ी से निकलती है।**
- यह पूर्व की ओर बहती है और दुमका जिले की उत्तरी सीमा के साथ-साथ बहने के बाद, गोड्डा जिले से अलग हो जाती है।
- **यह पाकुड़ जिले के महेशपुर में बहते हुए झारखंड से बाहर निकल जाती है।**

गंगा नदी

- **गंगा नदी,** संथाल परगना क्षेत्र में तेलियागढ़ी से कुछ किलोमीटर पश्चिम में झारखंड की सीमा को छूती है। यह मुख्य रूप से झारखंड के साहिबगंज जिले से होकर बहती है।